वर्षम् - ०२ अङ्कः - ०२ शोधज्योतिः
जनवरी-दिसम्बर, २०२० ISSN-2350-0700

बहु-आयामी व्यक्तित्व : विश्वकवि कालिदास

प्रो. बालकृष्ण शर्मा[१]

कविकुलगुरु, कविता-कामिनी के विलास विश्वकवि कालिदास ने लोकोत्तर चमत्कार का साक्षात्कार कराने वाला काव्य-संसार रचकर "कविरेकः प्रजापतिः" की मान्यता को प्रमाणित किया है। महाकवि की प्रतिभा श्रव्यकाव्य और दृश्य-काव्य - दोनों ही काव्यविधाओं में सर्वातिशायिनी हो कर शताब्दियों से वाङ्गमयी सृष्टि का साक्षात्कार करने वाले सहृदयों की दृष्टि को अपनी अलौकिक आभा से सूर्य और चन्द्र के समान निरन्तर प्रकाशित और विस्मित कर रही है।

प्राचीन भारतीय समीक्षक परम्परा ने इस तथ्य को प्रमुखता से रेखांकित किया है कि महाकवि को अनेक विद्याओं, शास्त्रों और कलाओं का ज्ञाता होना चाहिए। संस्कृत के काव्यशास्त्रीयों में अग्रगण्य आचार्य भामह ने इसी बहु-आयामिता को स्पष्ट करते हुए कहा था कि ज्ञान ऐसी कोई विद्या नहीं है जो काव्य का अङ्ग नबनती हो -

न सा विद्या न सा रीतिर्न तच्छात्रं न सा कला।
जायते यन्न काव्याङ्गमहो भारो महान् कवेः॥

नाट्यशास्त्र के प्रणेता आचार्य भरत ने भी नाट्य के सन्दर्भ में नाट्यकार के लिए सर्वज्ञता के विविध क्षेत्रों में दक्षता की आवश्यकता को इन शब्दों में प्रतिपादित कर दिया था -

तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।
नासौ योगो न तत्कर्म नाट्येऽस्मिन् यन्न दृश्यते॥

महाकवि कालिदास ने न केवल काव्य और नाट्य - दोनों विद्याओं में उत्कृष्टता के प्रतिमान स्थापित किये हैं, अपितु मेधदूत जैसे अपूर्व दूतकाव्य की रचना कर अपने बहु-आयामी व्यक्तित्व को शब्द और अर्थ के तेजस्वी आदर्शों में प्रतिबिम्बित किया है। अपने काव्यों और नाटकों में वे मन्त्रदृष्टा ऋषि, क्रान्तदर्शी कवि, भारतीय संस्कृति के श्रेष्ठ प्रवक्ता, शास्त्रज्ञ, प्रकृति के अनन्य आराधक, राष्ट्रभक्त, कला-मर्मज्ञ, यायावर पथिक, दार्शनिक - और इन जैसी अनेक छटाओं के साथ एक सच्चे प्रेमी के रूप में अपने व्यक्तित्व के बहुविध रूपों का साक्षात्कार कराते है।

---

[१] कुलपति, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

महाकवि की रचनाओं का अनुशीलन करने पर उनमे बहुमुखी पाण्डित्य के अनेक सन्दर्भ वैसे ही उजागर होते चले जाते है, जैसे किसी कलाकार की तूलिका से उभरता चित्र प्रतिक्षण अभिनव वर्णों का समग्र संसार सजाता है। भारत की महान् संस्कृति और सभ्यता के आदर्श स्वरूप को कालिदास ने अपनी वाणी में सुप्रतिष्ठित किया है। धर्म, अर्थ, और काम के त्रिवर्णात्मक पुरुषार्थ में धर्म का स्थान सर्वोपरि है। तभी तो महाकवि ने अपने कुमारसम्भव महाकाव्य में बटु-वेशधारी शंकर द्वारा तपस्यारत पार्वती से कहलाया है -

अनेन धर्मः सविशेषमद्य मे त्रिवर्गसारः प्रतिभाति भाविनि।
त्वया मनो निर्विषयार्थकामया यदेक एव प्रतिगृह्य सेव्यते॥

महाकवि की दृष्टि में यज्ञ, अध्ययन और दान की महिमा अक्षुण्ण है और भारतीय संस्कृति के मूल मन्त्र तपस्या के प्रभाव को उन्होंने अपनी रचनाओं में गौरवपूर्ण स्थान दिया है। रघुवंश महाकाव्य के आरम्भिक पद्यों में प्रयुक्त विशेषणों के माध्यम से वे भारतीय शासकों के आदर्श स्वरूप के कल्पना को शब्दों का आकार प्रदान करते दिखाई देते है -

सोऽहमाजन्मशुद्धानामाफलोदयकर्मणाम्।
आसमुद्रक्षीतीशानामानाकरथवर्त्मनाम्॥

यथाविधिहुताग्नीनां यथाकामार्चितार्थिनाम्।
यथापराधदण्डानां यथाकालप्रबोधिनाम्॥

त्यागाय संभूतार्थानां सत्याय मितभाषिणाम्।
यशसे विजिगीषूणां प्रजायै गृहमेधिनाम्॥

शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणाम्।
वार्धके मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम्॥

इन सन्दर्भों से महाकवि का वह व्यक्तित्व हमारे समक्ष उपस्थित होता है जो भारत की आत्मा से एकाकार तथा भारतीय संस्कृति का यशोगान करने वाला राष्ट्रीय कवि है। किन्तु कालिदास ने न केवक इस महान् राष्ट्र का आत्म-साक्षात्कार ही किया था, अपितु वे भारतवर्ष की भौगोलिक देहयष्टि से भी सुपरिचित थे। लगता है, महाकवि ने किसी अविश्रान्त पथिक की तरह समूचे देश का भ्रमण किया था। कुमारसम्भव में देवतात्मा हिमालय का अलौकिक दिव्य स्वरूप-वर्णन और रघुवंश महाकाव्य में लंका से अयोध्या लौटते हुए श्री राम द्वारा सीता को दिखाए जाते अनन्त-असीम महासागरका चित्रण महाकवि की अपनी आँखों-देखी ही तो है। मेघदूत में रामगिरि से अलकापुरी तक की यात्रा के बीच में आने वाली छोटी से छोटी नदियों और पहाडियों का उल्लेख भी इसी तथ्य की पुष्टि कराता है कि कालिदास ने

अपनी मातृभूमि के भौगोलिक स्वरूप का आत्मीय साक्षात्कार किया था। रघुवंश महाकाव्य में महाराज रघु की दिग्विजय यात्रा के प्रसङ्ग में भारत के विभिन्न प्रदेशों की प्राकृतिक विशेषताओं का सुक्ष्म वर्णन भी महाकवि के यायावरीय व्यक्तित्व को प्रमाणित करता है। वे अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतवर्ष की चतुर्दिक् सीमाओं के साथ ही उस के मध्यवर्ती क्षेत्र का भी समग्र दर्शन करा देते है और यह संकेत भी कर देते हैं कि इस महान् देश के शरीर और आत्मा दोनों का साक्षात्कार भारतीयता का अनुभव करने के लिए अपरिहार्य है।

कालिदास का साहित्य विविध शास्त्रों और कलाओं का सङ्गम है। गम्भीर शास्त्रवेत्ता महाकवि ने अपने बहुशास्त्रीय ज्ञान को बड़ी कुशलता से काव्य का आवर्जक आकार प्रदान किया है। वेद, वेदाङ्ग, स्मृति, धर्मशास्त्र, पुराण, दर्शन, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद, अर्थशास्त्र, सामुद्रिकशास्त्र, नीतिशास्त्र, शिल्पशास्त्र, अलङ्कारशास्त्र आदि पारम्परिक शास्त्रों में महाकवि की अबाध गति के असंख्य प्रमाण उनकी रचनाओं में बिखरे पड़े हैं। उनकी वेदज्ञता न केवल "प्रणवश्छन्दसामिव" या "श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्" जैसी उपमाओं में प्रतिफलित हुई है, अपितु अभिज्ञानशाकुन्तल में तो उन्होंने वैदिक छन्द की रचना कर अपने उस व्यक्तित्व का निदर्शन कराया है, जो एक वैदिक ऋषि का दिव्य स्वरूप उपस्थित कर देता है-

अमी वेदिं परितः कूप्तधिष्ण्याः
समिद्धन्तः प्रान्तसंस्तीर्णदर्भाः।

अपघ्नन्तो दुरितं हव्यगन्धै -
वैंतानास्त्वां वह्नयः पावयन्तु॥

वेदाङ्ग सम्बन्धी सन्दर्भों में - "क्षतात् किल त्रायत इत्युदग्रः क्षत्त्रस्य शब्दो भुवनेषु रूढः" से निरूक्त, "अपवादैरिवोत्सर्गाः कृतव्यावृत्तयः परैः" से व्याकरण, "न्यायैस्त्रिभिरुदीरणम्" से शिक्षा, "चित्रा-चन्द्रमसोरिव" से ज्योतिष आदि वेदाङ्गों में महाकवि की दक्षता स्वतः सिद्ध है। रघुवंश में अज-इन्दुमति और कुमारसम्भव में शिव-पार्वती के विवाह-प्रसङ्ग के कामशास्त्रीय सङ्केत प्रमाणित करते हैं कि महाकवि, कामशास्त्र के गम्भीर अध्येता थे। अर्थशास्त्र और नीतिशास्त्र के सूक्ष्म तत्त्वों के ज्ञाता कालिदास ने राजनीति के निर्देश देते हुए शासक के कर्तव्यों को सुपरिभाषित किया है। महाकवि की सभी रचनाओं में ललित कलाओं के मनोघर चित्र सुसज्जित हैं। संगीत के तीनों अंगों नृत्य, गीत और वाद्य की सूक्ष्मताओं के शास्त्रीय विवेचक कालिदास छलिक एवं चतुष्पदी जैसी नृत्यविद्याओं, विविध गीतियों तथा चतुर्विध वाद्यों के प्रयोग की अनेकत्र चर्चा कर इन कलारूपों में अपनी पारङ्गतता को सिद्ध करते हैं। मेघदूत में "आलेख्यानां स्वजलकणिकादोषमुत्पाद्य सद्यः" और कुमारसम्भव में "उन्मीलितं तूलिकयेव चित्रम्" जैसे सन्दर्भ चित्रकला के क्षेत्र में महकवि की सिद्धहस्तता के प्रमाण हैं।

कालिदास साहित्य में उपलब्ध दार्शनिक तत्त्वों से महाकवि का दार्शनिक स्वरूप प्रकाशित होता है। "यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिः", "तद्दर्शिनमुदासीनं त्वामेव पुरुषं विदुः", "वेदान्तेषु यमाहुरेकपुरुषम्" जैसे अनेक सन्दर्भ महाकवि की दार्शनिकता को सङ्केतित करते है।

प्रकृति के अनन्य आराधक कविकुलगुरु कालिदास का सौन्दर्यबोध पर्यावरण-चेतना से अनुप्राणित है। उन्होंने प्रकृति में परमेश्वर का साक्षात्कार करते हुए अष्टमूर्ति शिव की वन्दना के माध्यम से "सत्यं शिवम् सुन्दरम्" के शाश्वत आदर्श को प्रतिष्ठापित किया है। स्वप्रमाणानुरुप घट से आश्रमवृक्षों को सींचती शकुन्तला हो या वनचर गजराज की रगड़ से छीले देवदारु वृक्ष की व्यथा से दुःखी पार्वती, यक्षप्रिया के हाथों पाला-पोसा बाल-मन्दारवृक्ष हो या निसर्गकन्या के सहोदर वृक्ष-लताएँ, सर्वत्र कालिदास का प्रकृति-उपासक व्यक्तित्व ही तो साकार हुआ है।

कालिदास केवल परम्परा के अनुयायी और पोषक ही नहीं है। उनका एक क्रान्तिकारी व्यक्तित्व भी है जो यह कहने का सामर्थ्य रखता है कि यह मान्यता उचित नहीं हैं कि वह सब कुछ, जो पुरातन है, वही श्रेष्ठ है और कोई रचना केवल इस कारण सदोष नहीं हो जाती कि वह नूतन है। बुद्धिमान् व्यक्ति को परीक्षा करके निर्णय लेना चाहिए कि किसे स्वीकार किया जाए और किसे नहीं-

sपुराणमित्येव न साधु सर्वं
न चापि काव्यं नवगित्यवद्यम्।
सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते
मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः॥

विश्वकवि कालिदास के बहु आयामी व्यक्तित्व के उदान्त स्वरूप एक लोककल्याण-चिन्तक कवि के रूप में सर्वोपरि प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। कालिदास, वैयक्तिक उन्नति की अपेक्षा सामाजिक समुत्थान के पथधर हैं। वे समस्त संसार के मंगल की कामना करते हैं और यही तो एक सच्चे शिवाराधक व्यक्तित्व की पूर्णता है-

सर्वस्तरतु दुर्गाणि, सर्वो भद्राणि पश्यतु।
सर्वः कामानवाप्नोतु, सर्वः सर्वत्र नन्दतु॥